

যঈফ ও জাল হাদিস

হাদিস নাম্বারঃ ৫৪৬

১/ বিবিধ

আরবী

للإمام سكتان، فاغتنموا القراءة فيهما بفاتحة الكتاب
لا أصل له مرفوعا

وإنما رواه البخاري في " جزء القراءة " (ص 33) عن أبي سلمة بن عبد الرحمن بن عوف قال: فذكره موقوفا عليه. قلت: وإسناده حسن
ثم رواه عن أبي سلمة عن أبي هريرة موقوفا عليه، وسنده حسن أيضا
والذي دعاني إلى التنبيه على بطلان رفعه أنني رأيت ما نقله بعضهم في تعليقه على قول النووي في " الأذكار " (ص 63): " إنه يستحب للإمام في الصلاة الجهرية أن يسكت بعد التأمين سكتة طويلة بحيث يقرأ المأموم الفاتحة ". فقال المعلق عليه وهو الشيخ محمد حسين أحمد: " قال الحافظ: دليل استحباب تطويل هذه السكتة حديث أبي سلمة بن عبد الرحمن أن للإمام سكتتين.... أخرجه البخاري في كتاب " القراءة خلف الإمام " وأخرجه فيه أيضا عن أبي سلمة عن أبي هريرة. وعن عروة بن الزبير قال: يا بني اقرؤوا إذا سكت الإمام، واسكتوا إذا جهر، فإنه لا صلاة لمن لم يقرأ بفاتحة الكتاب ". فقوله: " حديث أبي سلمة.... " فيه إيهام كبير أنه حديث مرفوع إلى النبي صلى الله عليه وسلم وأن اللفظ من قوله صلى الله عليه وسلم كما هو المتبادر عند الإطلاق، وراجعني من أجل ذلك بعض الشافعية محتجا به! فبينت له أن الحديث ليس هو من كلامه صلى الله عليه وسلم، وإنما هو مقطوع موقوف على أبي سلمة، حتى ولو كان مرفوعا لكان ضعيفا لأنه مرسل تابعي

ثم قلت: ولوصح عنه صلى الله عليه وسلم لما كان حجة لكم بل هو عليكم! قال كيف؟ قلت: لأنه يقول: " فاغتنموا القراءة في السكتتين " وهما سكتة الافتتاح وسكتة بعد القراءة، وأنتم لا تقولون بقراءة الفاتحة أو بعضها في السكتة الأولى نعم نقل ابن بطال عن الشافعي أن سبب سكوت الإمام السكتة الأولى ليقراً المأموم فيها الفاتحة. لكن الحافظ تعقبه في " الفتح " (2 / 182) بقوله: " وهذا النقل من أصله غير معروف عن الشافعي، ولا عن أصحابه، إلا أن الغزالي قال في " الإحياء ": إن المأموم يقرأ الفاتحة إذا اشتغل الإمام بدعاء الافتتاح وخولف في ذلك، بل أطلق المتولي وغيره كراهية تقديم المأموم قراءة الفاتحة على الإمام ". وكذلك قول عروة المتقدم حجة على الشافعية، لأنه يأمر المؤتم بالسكوت إذا جهر الإمام. وهذا هو أعدل الأقوال في مسألة القراءة وراء الإمام، أن يقرأ إذا أسر الإمام، وينصت إذا جهر. وقد فصلت القول في هذه المسألة وجمعت الأحاديث الواردة فيها في تخريج أحاديث " صفة صلاة النبي صلى الله عليه وسلم

বাংলা

৫৪৬। ইমামের জন্য দুটি সাকতা (চুপ থাকার সময়) রয়েছে, অতএব তোমরা দুই সাকতার সময় সূরা ফাতিহা পাঠ করার সুযোগ গ্রহণ কর।

হাদীছটির মারফু' হিসাবে কোন ভিত্তি নেই।

এটিকে ইমাম বুখারী "জুযউল কিরাআহ" (পৃঃ ৩৩) গ্রন্থে আবু সালামা ইবনু আদির রহমান ইবনে আউফ হতে মওকুফ হিসাবে বর্ণনা করেছেন। আমি (আলবানী) বলছিঃ তার সনদটি হাসান।

অতঃপর তিনি আবু সালামা হতে তিনি আবু হুরাইরা (রাঃ) হতে মওকুফ হিসাবে বর্ণনা করেছেন। তার সনদটিও হাসান।

ইমাম নাবাবী "আল-আযকার" (পৃঃ ৬৩) গ্রন্থে বলেনঃ সালাতুয যেহরিয়াতে ইমামের জন্য মুস্তাহাব হচ্ছে এই যে, আমীন বলার পর দীর্ঘক্ষণ চুপ থাকবে যাতে করে মুক্তাদীগণ সূরা ফাতিহা পড়ে নিতে পারেন। তার উপর টীকা লেখক শাইখ মুহাম্মাদ হুসাইন আহমাদ বলেনঃ হাফয ইবনু হাজার বলেছেনঃ দীর্ঘক্ষণ চুপ থাকা মুস্তাহাব হওয়ার দলীল হচ্ছে আবু সালামা ইবনু আবদির রহমানের হাদীছঃ ইমামের জন্য দুটি সাকতা রয়েছে...। হাদীছটি ইমাম বুখারী "আল-কিরাআতু খালফাল ইমাম" গ্রন্থে বর্ণনা করেছেন। তিনি তাতে আবু সালামা সূত্রে আবু হুরাইরাহ

(রাঃ) হতে এবং উরওয়াহ ইবনুয যুবায়ের হতেও বর্ণনা করেছেন। তিনি বলেনঃ হে আমার সন্তানেরা, তোমরা সূরা ফাতিহা পাঠ করবে যখন ইমাম চুপ থাকবে। আর চুপ থাকবে যখন ইমাম উচু স্বরে পাঠ করবে। কারণ যে ব্যক্তি সূরা ফাতিহা পাঠ না করবে তার সালাতই হবে না।

তার ভাষ্যে যে বলেছেনঃ হাদীছ আবী সালাম... , এ কথা বলাতে সন্দেহ হতে পারে যে এটি নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম পর্যন্ত মারফু হাদীছ। যার জন্য এখানে হাদীছটি উল্লেখ করে সতর্ক করে দেয়া হয়েছে যে, এটি মারফু নয় বরং এটি মওকুফ।

ফুটনোট

[বিঃ দ্রঃ উক্ত হাদিসটি মাওকুফ সূত্রে হাসান, কিন্তু মারফু হিসেবে এর কোন ভিত্তি নাই। এমন অবস্থায় আমরা এর মান উল্লেখ করলাম না, যেহেতু মারফু' হিসেবে এর ভিত্তি না থাকলেও মাওকুফ হিসেবে তা সহিহ। যেমন বর্ণনা করেছেন, ইমাম বুখারী তার "জুযউল কিরাআহ" গ্রন্থে এবং শায়খ আলবানী একে হাসান বলেছেন।]

হাদিসের মান: তাহকীক অপেক্ষমাণ পুনঃনিরীক্ষিত

পাবলিশারঃ তাওহীদ পাবলিকেশন

🔗 Link — <https://www.hadithbd.com/hadith/link/?id=71425>

📖 হাদিসবিডির প্রজেক্টে অনুদান দিন